250
875 P
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1337 / 1091

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं॰ Acc. No. 875

आ० ग्रं० का तृतीय पुष्प

875

* वन्देमातरम् *

तरानये आजाद

लेखकः—

पं० सरयूनारायण शुक्ल कानपुर।

प्रकाशक—

आज़ाद ग्रंथमाला इटावा बाज़ार कानपुर

मुद्रक—

पं० गंगाप्रसाद शुक्ल सुधासञ्चारक प्रेस
कानपुर।

प्रथमबार १०००] सन् १९२३ [पौन आना

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 875
D. 23-12-71
GOVT. OF INDIA

प्रार्थना ।

गुलिस्ताने जहां में फिर बहारायें नये सरसे ।
यही है प्रार्थना मेरी सदा शिव श्री।विश्वम्भर से ॥१॥
नहीं है चाह अतलश की नहीं मखमल की ख्वाहिश है ।
लगे दिल हे प्रभो मेरा स्वदेशी शुद्ध खद्दर से ॥२॥
खबर तुम क्यों नहीं लेते दयामय दीन भारत की ।
तुम्हारे भक्त हा ! भगवन उदर भर अन्न को तरसे ॥३॥
मिटादो यह गरानी यह ग़रीबी हम ग़रीबों की ।
हमारा पिन्द भी स्वामी फले फूले सदाज़र से ॥४॥
जला कर खाक करदो दुश्मनों को चश्मे सोयम से ।
मिटें वह जल्द जो धमका रहे हैं तेगो खंजर से ॥५॥
रहें वह शाद और आबाद जो शैदा हैं भारत पर ।
यही है प्रार्थन सरयू का भोले भाले शंकर से ॥६॥

—*:०:—

स्याह दिल।

अगर है नाज़ उनको तोप और जंगी रिशालों में।
क़यामत का असर रखते हैं हमभी अपने नालों में ॥१॥
फंसा है इस कदर हिन्दोस्तां यूरुप की चालों में।
जकड़ जाती हैं जैसे मक्खियां मकड़ी के जालों में ॥२॥
भुलादें भेद दिलसे आप गोरे और काले का।
अगर रहना है हिलमिल कर तुम्हें हम हिन्द वालों में ॥३॥
अजब क्या है अगर हिन्दू मुसलमानों में एका है।
खुदा ही एक है खुद मसजिदों में और शिवालों में ॥४॥
वफ़ादारी के एवज़ में दिया भारत को रौलट-खेल।
छिपा है स्याह दिल बेशक तुम्हारी गोरी खालों में ॥५॥
बने बैठे रहो खुद अपने ही दिलमें मियां मिट्ठू।
अगर है आपकी गिनती ज़माने के रिज़ालों में ॥६॥
दग़ाबाज़ों से ऐ "सरयू" ज़माना होगया वाक़िफ़।
नहीं फँसने का अब हिन्दोस्तां यूरप की चालों में ॥७॥

—:०:—

पत्थर की बेड़ियां।

नाम तक लेती नहीं बुलबुल फ़ुगाँ फ़रियाद का।
मुँह उतर जाये न फिर क्यों कर भला सैयाद का ॥१॥
कैद में भी चहचहाने से नहीं आती है बाज़।
हौसला तो देखिये इस बुलबुले नाशाद का ॥१॥
क्या असर रखता है कहना हँस के यह वक्ते ज़िबह।
देखता है आज जौहर खँजरे जल्लाद का ॥३॥
बेवफ़ा जिस रोज दिलसे आह निकलेगी मेरे।
नाम तक मिट जायगा चर्खे सितम ईजाद का ॥४॥
ज़ालिमो! कहना खुदा के रूबरू यह हश्र में।
वास्ता हमसे नहीं कुछ जुर्म-बेदाद का ॥ ५ ॥
शौक़ से करले अभी जौरो जफ़ा बेइन्तहा।
रंग लायेगा सितम रोजे-जज़ा जल्लाद का ॥ ६ ॥
गुल समझ कर बेड़ियां पत्थर की पहनाने लगा।
सख्त आहन से सिवा है सग दिल हद्दाद का ॥ ७ ॥
आहनी खंजर तुम्हारा मेरा फ़ौलादी जिगर।
सामना "सरयू" हुआ फ़ौलाद से फ़ौलाद का ॥ ८ ॥

---o---

आबरू सरकार की ।

बेगुनाहों पर बमों की बे ख़तर बौछार की ।
दे रहे हैं धमकियां बन्दूक और तलवार की ॥ १ ॥
बागे-जलियां में निहत्थों पर चलाईं गोलियां ।
पेट के बल भी रेंगाया ज़ुल्म की हद पार की ॥ २ ॥
हम ग़रीबों पर किये जिसने सितम व इन्तहा ।
याद भूलेगी नहीं उस डायरे बदकार की ॥ ३ ॥
या तो हम मर ही मिटेंगे या तो लेंगे स्वराज ।
ख़त्म हुज्जत होती है इकरार अब इसरार की ॥ ४ ॥
शोर आलम में मचा है गान्धी के नाम का ।
प्यार करना उसको चाहा अपनी मिट्टी ख़्वार को ॥५॥
जिस जगह पर बन्द होगा शेर नर वह हिंद का ।
आबरू बढ़ जायगी उस जेल की दीवार की ॥ ६ ॥
जेल में भेजा हमारे लीडरों को बेक़सूर ।
लार्ड रीडिंग ने ये अच्छी न्याय की भरमार की ॥७॥
ख़ूने-मज़लूमा की "सरयू" अब तो गहरी धार में ।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की ॥ ८ ॥

—:०:—

मिटा रहे हैं।

जिन्हों ने वादा वफ़ा किया था जफ़ा से वह पेश आ रहे हैं।
हमारे दिलको दुखा रहे हैं दग़ा के नश्तर चला रहे हैं ॥ १ ॥
जो वक़्ते-गर्दिश में काम आया, खुशी २ खानुमां लुटाया।
व जंगे जर्मन में खूं बहाया, उसीको ज़ालिम मिटा रहे हैं ॥२॥
उन्हीं से की थी भलाई हमने, मगर मुसीबत उठाई हमने।
सज़ा उसी की ये पाई हमने, कि सख़्त सदमें उठा रहे हैं ॥३॥
हमारे दिलको दुखाने वाले, रहें सदा खुश बताने वाले।
हों ठंडे हमको जलानेवाले, खुदा से यह लौ लगा रहे हैं ॥४॥
वतन परस्ती निभायेंगे हम, न जुल्म से सर झुकायेंगे हम।
खुशी से गर्दन कटायेंगे हम, अगर वो खंजर दिखा रहे हैं ॥५॥
हज़ार ज़ख्मों के हार होंगे, मगर न हम बेक़रार होंगे।
वतन पे "सत्य" निसार होंगे, यही तो गांधी सिखा रहे हैं ॥६॥

रंडी बाज़ों की हिमाक़त ।

ज़रा से ऐश पर हिन्दू मुहल्माँ होते जाते हैं ।
तसद्दुक रंडियों पर दीनोईमां होते जाते हैं ॥
हज़ारों खान्दां हर रोज़ वीरां होते जाते हैं ।
जिनाकारी में लाखों घर वियाबां होते जाते हैं ॥
नहीं लेते ख़बर बीबी की जिसको ब्याह लाये थे ।
शिकस्ता रंडियों पर अहेदो पैमां होते जाते हैं ॥
न घर वाली से उल्फ़त है न बच्चों से मुहब्बत है ।
हिमाकत है कि दाना होके नादां होते जाते हैं ॥
हज़ारों जहर खाकर मरगये उश्शाक रंजिस में ।
न पूंछा रंडियों ने किसपे कुर्बा होते जाते हैं ॥
न नासह की नसीहत है न मां बापों की सुनते हैं ।
ये अशराफ़ों के क्यों इन्सान शैयां होते जाते हैं ॥

—०:—

दादरा।

अजब ख़ुदा की शान देखो।

हरा भरा गुलशन भारत का हुआ हाय वीरान देखो ॥१॥

गैरों के अब जुल्मो सितमसे दुखी है हिन्दुस्तान देखो ॥२॥

किया हमें बर्बाद हर तरह पहुंचाया नुक़सान देखो ॥३॥

खींच लिगये दाना दाना खाली है खलियान देखो ॥ ४ ॥

कोहिनूर व ताऊस तख़्त भी पहुंचा इंगलिस्तान देखो ॥५॥

किया हमारे घर पर कब्जा बन करके मेहमान देखो ॥६॥

अगर देखना है कुछ बाकी तो बागे ज़लियान देखो ॥७॥

उठो उठो भारत के वीरो गांधी का फरमान देखो ॥ ८ ॥

देखो क्या होता है सरगू ज़रा लड़ाकर जान देखो ॥ ९ ॥

॥ इति ॥